भाषा परिचय

भाषा:– भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढकर अपने मन के भावों व विचारों का आदान –प्रदान करता है।

दूसरे शब्दों में जिसके द्वारा हम अपने भावों को लिखित अथवा कथित रूप से दूसरों को समझा सके और दूसरों के भावों को समझ सके उसे भाषा कहते हैं।

➢ **भाषा तीन प्रकार के होते हैं–**

1. कथित भाषा
2. लिखित भाषा
3. सांकेतिक भाषा

CAREER FOUNDATION

लिपि:– एक भाषा की लेखन शैली अथवा ढंग को लिपि कहा जाता है। दूसरे शब्दों में – एक भाषा को लिखने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उसे लिपि कहते है। जैसे हिन्दी भाषा को लिखने के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग तथा अंग्रजी को लिखने के लिए रोमन लिपि का प्रयोग किया जाता है। खोरठा भाषा की लिपि भी देवनागरी है।

बोली– एक क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली भाषा का विशिष्ट रूप बोली कहलाता है। अर्थात छोटे से कस्बे या क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा बोली कहलाती है। बोली का साहित्य लिखित न होकर मौखिक ही रहता है , इसकी लिपि नही होती है। हम कह सकते हैं कि भाषा का क्षेत्रीय रूप बोली कहलाता है।

Note– झारखंड सरकार ने राज्य के 9 क्षेत्रीय जनजातीय भाषा तथा इसकी संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए क्षेत्रीय जनजातीय भाषा और सांस्कृतिक केन्द्र की स्थापना करने का निर्णय लिया है। इसके तहत खोरठा के लिए मुख्यालय बोकारो को बनाया गया है।

❖ झारखंड की राजभाषा हिन्दी है।

झारखंड में 16 भाषाओं को द्वितीय राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

झारखंड राज्य राजभाषा अधिनियम 2011 के अन्तर्गत 12 भाषाओं को द्वितीय राजभाषा का दर्जा दिया गया–

1. उर्दू	2. संताली	3. मुण्डारी	4. हो
5.खड़िया	6. खोरठा	7.कुरमाली	8.नागपुरी
9. बांग्ला	10. उड़िया	11.कुरूख	12.पंचपरगनिया

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

झारखंड राज्य राजभाषा अधिनियम 2018 के अन्तर्गत और 4 क्षेत्रीय भाषाओं को द्वितीय राजभाषा का दर्जा दिया गया जो निम्न है:–

13. मैथिली	14. अंगिका
15. भोजपुरी	15. मगही

झारखंड की एकमात्र जनजातीय भाषा संताली को संविधान की 8वीं अनुसूची मे जगह मिला है। इसे 92वें संविधान संशोधन 2003 के द्वारा शामिल किया गय। इसके अलावा झारखंड की राजभाषा में शामिल हिन्दी, बांग्ला , उड़िया ,मैथिली , उर्दू है जिसे आठवीं अनुसूची में जगह दिया गया है।

➢ सम्पुर्ण विश्व में 45% (लगभग) लोग भारोपीय भाषा परिवार बोलते है।

➢ भाषा परिवार– आपस मे संबंधित भाषाओं को भाषा–परिवार कहते हैं।

➢ भारोपीय भाषा परिवारः–

इसे हिन्द –यूरोपीय भाषा परिवार या भारत–यूरोपीय भाषा भी कहा जाता है। यह समूह भाषाओं का सबसे बड़ा परिवार है । इसके अंतर्गत –अंग्रजी, रूसी, फारसी, हिन्दी, पंजाबी तथा नेपाली भाषाएँ आती है।

खोरठा को भी इसी भाषा परिवार में रखा गया है। अतः खोरठा आर्य भाषा परिवार की एक क्षेत्रीय भाषा है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

(1) खोरठा भाषा की विशेषताएँ–

खोरठा भाषा उत्तरी छोटानागपुर, संथाल परगना आर पलामू परमंडलेक 16 जिलाञ् बोलल जाहे। ई छेतरेक , छेतरफल करीब 48 हजार बर्ग किमी हे, ओकर मांझे 31 हजार वर्ग किमी टांय खोरठा बोलल जाहे। हियांक लोकें संथाल छोइड़ के बाकी सोब आदिबासी–सदान खोरठा के माइकोरवां आर समपरक भाषाक रूपे अवनावल हथ, मेनेक आपसें बतियाय घरी एकर परजोग कर हथ।

➢ खोरठाक आपन भासिक बिसेसता हे, जे हेठे रकम देखल जाइ पारों हइ–